Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi LalM 1

13.C.49.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

~~Lalaman~~

Rāma-kalevā.

Ram Kulewa

श्री सच्चिदानन्दमूर्त्तये परमात्मने नमः

श्रीरामकलेवा

رام کلیوا

मुन्शीलालमनी साहबविरचित

जिसमें

श्री कोशला नन्दन दशरथ कुमार परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदा
नन्दघन श्रीरामचन्द्र जी महाराज ने अपने चारों भाइयों
सहित श्री जनक जी महाराज के यहाँ विवाहोत्सव में
लौकिक रीति के अनुकूल जनकपुर की स्त्रियों से
लीला विलास सुन्दर हास इत्यादि किये हैं

ग्रन्थकर्त्ताकी अनुमति और स्वत्वदत्तापूर्वक

दूसरी वार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापे खाने में छपी

सम्वत् १९३८ विक्रमी मुताबिक़

जूलाई सन् १८८१ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथरामकलेवालिख्यते

सोरठा

होतबुद्धिपरकाश ।ऽ। धरत ध्यानशंकरसुवन
पूजत मनकीआश ।ऽ। जासुनाम मुखलेतहीं
श्रीगुरु पद धरि ध्यान। करौंकथा हरिगुण विशद
ह्वौ सोदया निधान ।ऽ। निजसेवकजनजानके॥
जयजयजय सुखधाम। रमारमण सुखमा सदन
अधमउधारन नाम ।ऽ। कहि नर भव सागर तरहिं
नाय शिवा शिव माथ ।ऽ। चरणकमलउर धारिकै
कहौं रामगुण गाथ ।ऽ। करौ कृपा करुणा अयन
वन्दौ अवध नरेश ।ऽ। त्रिभुवन पतिजाने सुवन
करत प्रशंस सुरेश ।ऽ। अर्धसिंहासन देइकै
वन्दौ चरण विदेह ।ऽ। धन्यसुकृत कीरत विमल
सदा रामपद नेह ।ऽ। निजहिये राख्यो गोइकै
जयजय पवन कुमार। दुष्टदलन शोकठ हरण
कीरत जासु उदार ।ऽ। श्रीपति निजमुख आपकहि

दो० विघ्नहरण मंगलकरण। वरदायक गुणखान
कथा मधुर सियराम की। कहत सुनत कल्याण

चौपाई

सुमिरि गणेश सरस्वती माता। सिद्धि सदन अभिमत फलदाता
शैलसुतासुत जनक निहोरी। कहिहौं कथा जथा मति मोरी
जो सुनि होइ उमङ्ग उछाहू ॥ लोक लाहु परिनाम निबाहू
जनक भुवन जब राम कलेवा। भ्रातन सहित कीन्ह सुखदेवा।
हास विलास परम सुखकारी। कीन्ह जो हिलमिल सरहज सारी
है ससुरारी सुख की सारी। ॥ ताते जग लागत अति प्यारी।
सोई रघुनाथ चरित उछलाई। कहौं जथामति करि चौपाई
रामचरित्र विचित्र सुहावन। समन सकल दुख मोद बढ़ावन
पढ़ै पढ़ावै प्रेम सों जोई। ॥ प्रेम रामपद पंकज होई

दो० प्यारी लगै ससुरार की। सारी सरहज हांस ॥
नारी नागरि जनकपुर। हिलमिल कीन्ह विलास

सो० शिवसुत उर राखि। वरणौं हरि गुण विशद जश
पूजै मन अभिलाख। पैहैं सुख सुनि सुजनजन

जय गणपति जय जय गुरुदेवा। सुर मुनि मनुज करत पद सेवा
जय महेश हरि परम सनेही। हर भजैं राम राम भजैं तेही
अस प्रीति की रीति सराही। अति अटपट कहि जात सो नाहीं
जेहि विधि जनक भुवन रघुनंदन। कीन्ह कलेउ भक्त उर चंदन
दियो विपुल सुख सरहज सारी। सो सब भेव कहब विस्तारी
व्याह उछाहु सिया रघुराई। सो उछाहु कहो नहि जाई
क्षण महँ बीति गई सब राती। रागे रंग सब भूप बराती। ॥

भोरभयो सुनतजनकबोलाये। सखन सहितलक्ष्मीनिधआये
करि प्रणाम चारणन शिरनाई। बैठ्यो ढिग अनुशासन पाई
दो॰ मुनिविलोकि बोलेजनकबेग जावजनवास
कहियो वचनविनीत युत नृप दशरथके पास
सो॰ कहियो विनयसुनाय। जोरिपाणिप्रनामकरि
पठवौ चारिउ भाय ॥ करण कलेऊ के लिये
यहसुनिशीशनायलक्ष्मीनिध। अस्तुर मोद उमंगविविधविध
सखनसमेत मन्द मुसकाई । चढ़ि चढ़ि तुरंग चले हरषाई
जहँराजतनृप दशरथ राई ॥ सुख समाजसब साजबनाई
बैठे सकलसभा रघुबंशी ॥ तेजवंत भूषण कुलहंशी ॥
चौपित चोवदार परचारैं ॥ बन्दीगणवर बिर्द उचारैं ॥
सुखदायक गायक गुण गावैं। सुनत श्रवनमन हर्ष बढावैं
मधुर मधुर स्वर नौबत बाजै। सोसुनिशब्द गगन घनगाजै
कलिनदिखावतहयथिरकावत। कामबाजकोलाजलजावत
जात चले मग करत तमासे ॥ पहुँचेजाय निकट जनवासे
दो॰ उतरबाजितेसखनयुत। श्रीनृपजनककुमार
सुतनसहितअवधेशको। सादर कीन्ह जुहार
सो॰ कीन्हत्वर्नि सतकार ॥ लक्ष्मीनिधमखदेखिके
निजसमीपबैठार ॥ नृपदशरथ गहिहाथकर
भ्रातन सहित राम छवि देखी। लक्ष्मीनिधभयो मोदविशेषी
सखन समेत बहुत सुख माने। उनहुन लखिदृगराम जुडाने
तवलक्ष्मीनिधिउठिकरजोरी। बोलेवचनसुधाजनु बोरी।
चारिउ भ्रातन आयसु दैयै ॥ करण कलेऊ हेतु पठैयै ॥

सुनि मृदु वचन प्रेम रस साने। कोसलपति नव मन मुसकाने
चारो कुंवर वोलि नृप लीन्हा। वेग विदा सम ध्याने कीन्हा
जनक नगर की जानी त्यारी। सुचि सेवक सव भये सुखारी
तन पुलकित मन अति अनुरागे। निज निज प्रभु वे सव रन लागे
लै भूषण अंग अंग सव साजे। कोटि अनंग देख छवि लाजे
दो० शोभित भाल विशाल पर केसर तिलक रसाल
हर्षे सुर देखें गगन। वरखें फूलन माल ॥
सो० कानन कुण्डल लोल मणिन जटित दामिनि दुति
मोती लगे अमोल। हिलें कपोल कसाये के ॥
सुवर्ण ताग पाग नव रङ्गी ऽ वांधी शिरन पेंच त्रिभङ्गी
छवि कलंगी अति रुचिर वनाई। कलिन कलिन दुति ललित सुहाई
अति मृदु मंजुल गौर विराजे। इन्दु वधू लखि दुति छवि लाजे
सेहरा कुंजर मणि दृग राजत। देखत हर्ष हिये उपराजत ॥
ताके कोर कोर चहुं ओरा ऽ। लागे रत्न मणिन के वोरा
जगमग ज्योति होति चहुं पाहीं। श्याम घटा में रवि परछाहीं
कच मेचक सुंदर घुंघु वारे ऽ। जनु रति पति निज हाथ सवांरे
दृग विशाल सुंदर सुखकारे। विश्व विमोहन अति रतनारे
अञ्जन श्यामल गे उनहि पोरन। डीठ वचावन जन चित चोरन
दो० अरुण अधर हसनन दमक जनु शशि किरन प्रकाश
शुक निंदक नाशा ललित मन्द माधुरी हांस
॥ सोरठा ॥
कुन्दन वर्ण कपोल ।ऽ। छवि उपमा नहिं जात कहि
वोलन मृदुल अमोल। जनु वरखत माला सुमन

अति विचित्र तिर्भङ्गी भौंहैं । जेहि बिलोकि सुर नर मुनि मोहैं
जग मगात सुन्दर तनु श्यामा । मणिन जटित केसर रंग जामा
कोरन छोरन लागे मोती । दमकत दमकत मनो रवि ज्योती
कंध सुभग पटुका सुखकारी । सोहत मोहत लखि नर नारी
कण्ठमाल गज मुकता छाजै । सुबरण मणि की गुंज बिराजै
कठुला मंजु सुकंठ सोहाई । जाने जाइ न बरि डिठ पाई ॥
भुज अंगद अनुपम नग लागे । सुर नर मुनि जेहि लखि अनुरागे
कनक कड़े नग जड़े कर माहीं । सो छबि गड़ी मदन मन माहीं
कर पहुंची बांधे सुखदाई । मन युवतिन के लेत चुराई ५ ॥

दो० अंग अंग गात दुति छबि ललित श्याम सलोने गात
मनो छटा विद्युत लता श्याम घटा छहरात ॥

सो० प्रभु उर मंजु अमोल वैजन्ती माला लसत
लेत सबन चित मोल बिन दाम न जो देखहीं

॥ चौपाई ॥

कर मुद्रिका अधिक छबि देई । मन युवतिन देखत हर लेई ॥
कर कंकन कुसुमित रंग डोरा । मानो जंत्र बसी चित चोरा ॥
फेंटा पीत कमर सों बांधे । कोर किनारिन मोतिन सांधे ॥
पीत बसन तनु सोहत धोती । कोर छोर गूथे गज मोती ॥
पीत चूरना सुभ सोहै सरसी । बरणि छबिन बरणत मन हरसी
पद सरोज लागे सुभ जावक । चूम्यो त्रियन उर जनु भवनावक
जड़ित रत्न सोहैं पग पनहीं । युवतिन देव बनायो जिनहीं ॥
देत चलत पट लरकत सुन्दराई । जहं दूलह रघुनाथ गोसाईं
लाल मनी किमकैह बरवानी । त्रिभुवन नाथ रूप छबि खानी

दो० चारौ दूलह देखिकै नभ सुर बरषैं फूल ॥
नाक नटीन नतैं थिरक तनु मन धन सुधि भूल
सो० राम रूप गुण खान सब उपमा फीकी लगै ॥
को करि सकै बखान । दूलह त्रिभुवन नाथ को

इमि सजि सब अवधेश कुमारा । भये छैल नव अस्व सवारा ।
करि बनाव सब साज अमीरी । जात बनात खात मुख बीरी ।
और हुते जे रघुकुल वारे । ते प्रभु भये प्राणन ते प्यारे ॥
चढ़े तुरङ्ग सङ्ग मा तेऊ । राम रङ्ग मतवारे तेऊ ॥
राम वाम लक्ष्मी निधि सोहैं । हिलि मिलि बातैं करत हमोहैं ।
चोपदार बोलै परपांसी ॥ लैलै नाम भूप रघुबंसी ॥
जे यह पर राजत रघुनन्दन । प्रगट नाम जग है जग बन्दन ।
ताके गुण छवि कहलौ कहिपे । पटतर लखि तन खीझे पैयै ।
तासु बिलोकि लज्जित रवि वाजी । देखत तासु होत मन राजी ।
दो० चंचल सब दूखन रहित । भूषित भूषण अङ्ग
ता अनूप छवि देखिकै । लाजत बाजि अनङ्ग
सो० चपल चलै चहुं ओर । छत्र सिखा शिर ढांपकै
लागे मोती कोर । जड़ित जवाहिर जीन पर ।

माथेपाग चन्द्रकी खौरी।ऽ।जनु रविशशि बैठे यक ठौरी
तनिन मणिन सों गूंथी चोटी।उपमा भुवन किरनहै छोटी
चटित लगाम दाम बहु फेरी।कारिन सकल समकुंदन ढेरी
सुवर्ण कलगी ललित सोहाई।मणिमाणिक नग जडित बनाई
खचित हमेल कराठ बिच मेली।त्रिभुवन छवि इकठौर सकेली
गज मोतिन के परे सड़ाके।तिन कहँ हैं तिहुं लोक तड़ाके॥
पेटी सुवर्ण तार लपेटी।ऽ मनो काम मन लेत चपेटी
पूंजी पटा की छटा छहराई।कामलता मन माहिं लजाई
जेर बन्द मन बंधन फन्दा।ऽ तुङ्ग सुरङ्ग किरन जनु चन्दा
दो० पांय पयज्जनी पायकै दर्शावत है रूप ॥ऽ॥
छकित होत सब देखिकै शोभा अमित अनूप
सो० परी पीठ गज गाह।अति विशाल मृदु मनहरण
दिन प्रति देखन चाह।उमडो रहत द्रग कोर मे

॥चौपाई॥

परीं रकावैं जनु विधु घेरा।घुमची दमक करत चित चेरा
कटि पीनी खीमी खुर थालैं।बंधी नबीनी नाल रसालै॥
फफकत फांदत हैं चहुं वोरा।थिरकत निरतत मानौ मोरा
जित रुख पावै उत पग चावै।क्षण आवै क्षण मा फिर जावै
पवन समान उडत नभ माहीं।रामरजाय देत पै नाहीं ऽ॥
लेत उतालै सिंह उछालैं।ऽ।करत समुद्र को ऐकै फालै
जल थल अनिल अनल पै जावै।उरमा शंक तनक नहिं लावै
जबै धरा परते उठि दापै।ऽ।रवि बाजी निरखत उर कांपै
धावत पवन छुये नहिं पावै।खगपति हू को गर्व गवांवै

दो० नामसमुदमुददेतजननापरभरथविराज॥६॥
दाहिन दिशा श्रीराम के चपल चलनगतिसाज
सो० कबहुक नभचरजाय मुरनछकावतविविधविध
अनुपमकला दिखाय कबहुकफिरआवतअवनि
भरथकुँवरको बाज रंगीलो। अनुपमकला दिखाय छबीलो॥
छमकनचलनलेनगतिबाँकी। हर्षबढावत दै दृग झाँकी॥
लेत चौकडी भरि भरि टापें। होयंलखिन चपलाचखझापें॥
ऐंफनबाग बहुत रिस पावै। गर्वसमेत मुरिक तब आवै॥
चम्पा नाम नत्त उजियारा। रिपुसूदन को अश्व दुलारा॥
कूदन फाँदन करत तरङ्गा। निरतत मानों मोर कुरङ्गा॥
सब समाज के आगे जाई॥ कौकहिसक शोभा अधिकाई॥
हाथ उठावत यह गति होई। कहुं हाथ उड़जात है सोई॥
बार बार कर फेरि दुलारैं॥५॥ लैलै नाम चूमचुचकारैं॥
दो० चुचकारत दुलरायकै। ताहूपैन जुड़ाय॥
रिसबसहोइ अकाशनत। हेरि हेरि हेंहनाय
सो० हेरनकानउठाय। चंचल चपल दसवदिशा
धरत धरणि गन पाय। बार बार हेंहनायकै
लखणलालको बाजि अनूपा। लाववी नाम विदितमुखरूपा॥
बाँको निपट चपल अतिसुन्दर। उड़उड़ जात गगनते ऊपर॥
परतन पगताके महिमण्डल। ऐसा क्षितऊपर छणरविमण्डल
ऐसामा छमकि २ गति राचै॥ मनो कुरङ्ग मोर गतिनाचै॥
उछलत कूदत गगन उड़ाई। पर्योंश्री निधु हयपर आई॥
अचिनविचार हंसे हरखाहीं॥ रामो मधुर मन्द मुसकाहीं

उर अकाश गतिकरि मन हरणी। सुरन छकावन आवत धरणी
तोप तुपक छूटै तहाँ जूटै ॥ ५ ॥ समर मांझ बीरन रस लूटै ॥
देखि प्रताप तेज बल तासी । चकसे रहे सब जन पुरवासी

॥ दोहा ॥

देखनहीं मन बस करन विन दामन विन मोल
ताकी छवि गतिको कहै घोड़ा बड़ो अमोल

॥ सोरठा ॥

धरत अवनि जब पाय मानौ फूल बसे झरत
अद्भुत गतै दिखाय करत तमाशो ज्ञान मग

॥ चौपाई ॥

तकि तुरङ्ग की चंचल ताई । लषण लालकी निपुन चढ़ाई
निमि बंशी रघु बंशी जेते ॥ ५ ॥ छकित भये सब देखत तेते ॥
राम आदि जे राजकुमारा । तेउ लखि भयो मोद अपारा
रीझा रीझा तह सब सुख पाई । लखन लालकी करत बड़ाई
इमि मग होत विविध विधि हांसा । करत परस्पर मोद विलासा
सुनि बाजन रव उड़ि उड़ि धाई । झीमीं निकर पंवर पर आई।
कोउ २ चिकन झरोखन लागीं । राम रूप देखन अनुरागीं ॥
कोउ २ निरख राम मुख शोभा । भरीं सो प्रेम मगन मन छोभा
कोउ घूंघट पट खोलि निहारैं । देखि राम छवि सुरत बिसारैं ॥
दो० लेकर ठाढ़ी आरती । कोउ त्रिया परम सुजान
देखन वर शोभा सुभग । राम रूप सुख खान ॥
सो० निज सूरत सुधि त्यागि । माधुर सरस मे मगन ॥
लालमनी सुख पाग । प्रभु सूरत लखि सांवरी

कोउ त्रिया फूल हूं रूप बिलोकी। इकटक रही नयन पट रोकी॥
एक सखी बोली मृदु बयना। ये सखी आज जनक के ऐना॥
लक्ष्मी निध को जनक पठायो। करुणाकलेड को संग लायो।
रंग भीने रघुबंशी चारे॥ भूप दशरथ के प्राण पियारे॥
धन्य बड़े भाग हमारे प्यारी। जो भरि नयनन लीन्ह निहारी
नतु दुर्लभ सखि दर्शन इनके। कहँ हम कहँ नायक त्रिभुवन के
भाग सुहाग धन्य नृप बेटी। जे प्रभु मिलहैं भुज भेटी॥
बोली अपर सखी हरखाई। भली बात विधि आजु बनाई
चलिये जनक भुवन अनुराई। हँसिये हम हूं इन्हें हँसाई॥
दो० इम मृदु करत बतकही। गई प्रेम बस बाम॥
मुनि मुसकात अनुज युत कृपासिंधु श्रीराम
सो० जात नचावत बाजि छबि छावत करुणायतन
त्रिभुवन पति सिरताज। सुख शोभा को कहि सकै
बाजन बाजत विपुल सुहावन। सुखदायक सुन्दर मन भावन
चोबदार जगर बर भाखैं। लै लै नाम भानुकुल राखैं।
यह विध चारों राज दुलारे। प्रमुदित जनक नगर पग धारे
सिंधु रमणि मय चौक संवारी। ठाढ़ी तहाँ रघुकुल असवारी

नगर सुवासिन औ पुर नारी ॥ पाय स्नाय सिया महतारी ॥
कंचन कलश साजि शिर ऊपर । गावत मंगल गीत मनोहर
साज आरती कंचन थारी ॥ ॥ परछन चलीं हर्ष उर भारी
जाय समीप निहारि निहारैं । लखि छवि राम तोर तृन डारैं
छकित भई वर बदन विलोकी । थकित रहीं ठाढ़े पग रोकी

दो० राम रूप रंग मे रंगीं ॥ लखि दूलह सुखसार
तन मन की सुधि कछू नहीं को करै मंगलचार

सो० धीरज धरेउ बहोरि । प्रेम पयोधि मगन सब ।
रोंकि बारि दृग कोर ॥ परछन करैं मुदित मन.

प्रथम उतारि मिथला पति वारे । गहि कर चारौ कुंवर उतारे ॥
राम अनुज पुन सखन समेता । पाग पकर लै गयो निकेता ।
दीप दीप के सकल महीपा ॥ बैठे जहं तहं जनक समीपा ॥
बैठे सभा सकल निमि बंशी ॥ एक ते एक रूप सुर अंशी ॥
चोबदार झूंगर उच्चरहीं ॥ । मधुर स्वरन नौबति तहं भरहीं ।
तहाँ जाय रघुवंश कुमारा ॥ अनुज सखन युत कीन्ह जुहार
देखत उठे सबै नर नाहा ॥ तन पुलकित मन परम उछाहा ।
गहि कर जनक निकट बैठारे । निरखि राम छवि भये सुखारे

हगसहेरा शिर मौर विराजी ॥ दूलह भे बदेखि सब राजी ॥

दो० तहाँ कछुक दरबार करि दशरथ राजकुमार ॥
पाय रजाय सुनाय शिर सासु समीप सिधार ॥

सो० आवत सुनि रनवास। रघुवंशिन के लाल को
भई मुदित मन सासु। सो सुख शेष न कहि सकै

जहँ पिकबैना सब सुख ऐना ॥ बैठि तहां महरानि सुनयना।
इन्द्राणी की कवन चलावै ॥ ॥ लखि बरन रूप छोह उपजावै
चन्द्रमुखी चहुँ ओर विराजें ॥ लखि छबि ललत कोटि रति लाजै
कोउ चमर लै पवन डुलावै ॥ कोउ आरती मंगल गावै ॥
कीनखाप अतलस बहु भांती। बिछे बिछौने अगनित जाती
तापर मसनद गद्दी राजै ॥ ॥ बैठ सुनयना शशि छबि छाजै
तेहि क्षण गये तहां रघुनन्दन। सुख सागर जो तिन मन फंदन
देखन उठीं सकल रनवासा ॥ रह्यो न चेत न मन प्रभु पासा
करि आरती बसन मणि वारे। सादर पंकज पाँय पखारे ॥

दोहा ॥

चार सिंहासन चार रंग चारों बर बैठार ॥ ॥
लखि छबि छकि न रहीं सब तन मन धन सुधि वार

सो० सासु मगन मन मांहि । राम रूप रंग में रंगी ।
आंसु बहै दृग मांहि । तकित रही बोलै नहीं
यह जब दशा सासु की देखी । रामगुणन मन माहि विशेखी
कहा भयो रानी का आजू । पूछन में सकुचत रघुराजू ॥
चतुर सखी चित चर्च सयानी । बोली विहसि मधुर मृदुबानी
यह तुम्हार सब गुण है लाला । औरन कछु उर दीन दयाला
यह सुनि बचन धीर धरि रानी । समै सोहावन अवसर जानी
सांवल सूरति माधुर मूरति । सिया मातु प्रभु देखि विसूरति
बारबार बहु लेत बलैया । तन तोरति लखि चारिउ भैया
चूम कपोल पर्श निज पानी । रहीरीझ बिन मोल विकानी
पुन कर जोरि राम सों रानी । बोली अति मृदु मंजुल बानी
दो० करौ कलेउ लाल उठ । जो रुचि मन की होय ॥
यह सुनि उठे उ राम तब । बंधु सखन युत सोय
सो० निजकर पांय पखार । रानि सुनयना भाग धन
पटिक पदन बैठार । चारौ भैयन सखन युत
विविध भांति पकवान मिठाई । ताको स्वाद बरणि नहिं जाई
षटरस विंजन मधु पक मेवा । जेहि विलोकि छोभित मुनि देवा
परसि सुनयना कंचन थारी । धरि आगे मृदु बचन उचारी
सुनौ लाल सब राज दुलारे । सेवा योगिन भाग हमारे ॥
तोषित दिनकर अंजुल पानी । करौ कलेऊ अस उर आनी
सुनि मृदु बचन राम अनुरागे । भूप सुवन सब जेवन लागे ।
रानी सुनयना पवन डुलावति । लखि प्रभु रूप अमित सुख पावति
बूझि रुचि विंजन परसति । प्रेम मगन मन ही मन हुलसति

स्वादसराहि खाय अँचवाये। तवसखियनले पानखवाये
दो० बैठे पहिर पोशाक तव। विविध सुगन्ध लगाय
हर्षित सुरबर षैंसुमन। उठी अंगना गाय॥
सो० राजत राज कुमार। राजभवन में हर्ष युत।
राजत लक्ष्मण सार। जिनके हास विलास लखि
तेहि अवसर सुनि श्रीनिधनारी। जो गुण रूप शील उजियारी
नाम प्रसिद्ध सिद्धि है जाकाव। भाग सुहाग भरी शुठ सुन्दर
नव नागरि योवन मतवारी। चपला रतिहि लजावनहारी
रसकिन प्रीति रीत परवीनी। गुण आगरि हर बात नवीनी
लक्ष्मी निधकी प्रान पियारी। प्रीन प्रीत निवाहन हारी
रूपवानि अतिशुभग सयानी निमिवंशी कुलकी महरानी
अलबेली सरहज सुखकारी। सुघर सुशील सनेह सिंगारी
राम रूप पर रहीं रिझाई। चंचल देखन को अतुराई
सखिन संगले उमंग बढ़ाई। त्वरितैं निकट राम के आई॥
दो० बदन चंद्र अरविंद कर। वेहँसत मन्दरि सोहिं
रामकावरकर पकरि कर। बोली तकि तिरछोहिं
सो० हो चित चोर किशोर। बड़े चोर तुम साँवरे
गयो सासु की चोर। सुरनि हमारी भूलि के
उलटी बात कहो जनि प्यारी। आपन दोष दुरावो नारी॥
तुमहिं छिपी सुनि हम रिझवारी कहत बात पुनि बात बनाई
लाय हमें लक्ष्मी निधबोली। तुमन सुने उरऐसी वोभोली
भलो सदन तुम रचेउ बनाई। जहँ तुम्हरे सब जात समाई
सुनत रामके वचन रंगीली। बोली मृदु मुसक्याय छबीली

ऐसि रीति तुम घर रघुराई। ५ । इहां न चलिहै छैल चलाई
सासु सुनयना के ढिग माहीं ५ । देत बचन उत्तर कछु नाहीं।
पकरपाणि हरि हंस सुख मोरी। गे लिवाय निज भवन किशोरी
चार सिंहासन दिव्य मंगाये ५ । चारौ चारु चारि रंग आये ॥

दो० बैठारे कुंवरन सबै ५ । निज कर आी निध नारि
बारहि बार निहार छबि। शुभ आरती उतारि ॥

सो० मालसुमन पहिराय। विविध सुगंध लगायकै
निज कर पान खवाय। अंचल सों मुख पोंछिकै।

कनक खचित मणि जटित दिवालैं। जगमगात दुति ललित विशालैं
बैठीं सुन्दरि किये सिंगारैं ॥ ५ ॥ रति रंभा लखि निज छबि वारैं
कोउ सुमन लै हार बनावै ५ । करता फूल कोउ कलंगी रचावै
कोउ ठाढ़े लै चमर डुलावै ५ । कोउ कर लै दरपन दिखरावै
निज निज साज समाज बनाई। हरि सन्मुख बैठीं सब आई ॥
कोउ जलतारँ गितार बजावै। कोउ सितार लै गति दर्शावै।
कोउ उपंग मुरचंग मिलापै । दै दै मुख मिरदङ्ग के थापै ॥
कोउ करतार बीन गति छावति। कोउ तम्बुरा तार मिलावति।
कोउ तिय पंचम राग अलापै । सो मुनि विरहिन के जिय कांपै

दो० कोऊ तानको मान दै। छावति तान वितान॥
सोसुनि द्रवै द्रुमलता। अवै हृदय पखान॥
सो० राजकुंवर अनुराग५। द्रुमि अभिराम धाम लखि
परम प्रेम रस पाग ५। सिथसर हुज सौ बात करि
जे आई नृप नेवत हंकारी। निमकुलकी सबराजकुमारी
रूप सील सब गुणकी रासी। रामसुधा दरसनि की प्यासी॥
अति निर्दोषित तिनकी बानी। भूषित भूषण अङ्ग सयानी
मृदु बोलन अरु मन्द हंसो है। जितजावै मुनिजन मन मोहै
तिन यह सुनेउ कि चारों भाई। सिद्ध महलमा बैठेउ आई॥
त्वरितजहां पहुंची सब प्यारी। जानि हृदय हरिको सुखकारी
हर्ष सहित लक्ष्मी निधि नारी। कर सन्मान निकट बैठारी॥
रामरूप छवि देखन लागी। द्रग आनन्द प्रेम रस पागी॥
चख भख परे रूप निधि माहीं। कढैं न काढे कोटि उपाहीं
दो० मणिगन मोर कलगी रतन। अतिशय शोभा देत
राज बिदन की कोकहै। मुनियन को मन लेत
सो० पीत वसन तन श्याम। कर न कलित कंकन ललित
लखि शोभा अभिराम। [illegible] कित भई रहि ध्यानधरि
जोगी जती सती तप धारी। [illegible] लखि निज विरति बिसारी
अति विशाल रतनारे नयना। [illegible] वियन मनु वंकन सयना
छूटी अलकें मुख पर लटकैं। मनुदुइ कारे दुहु दिसि मलकैं
जोइन जहर चढ़त जोतिनके। लागत जरी न बूटी तिनके।
विकट भौंह जनु चाप चढ़ायें। मृगनीतिनवध घाल लगाये
मंद हंसन जियकी जनु फांसी। पलकनयन मानो शरगांसी

वीरन की लाली अधरन पर + । मन्द प्रभा दामिनि घन ऊपर
निरखत छवि दुति दसन रतन की । सुधि न रहत तन असन वसन की
झीन सो जामा यति अभिरामा । सोहत श्याम गात घनश्यामा ।

दो० दूलह मूरति देखि कै + । विसरा सबै अपान ।
सन्मुख वर बैठीं सबै + । प्रेम मगन धरि ध्यान

सो० भईं विवश सुकुमार । मन लोभा शोभा निरखि
तन मन दशा बिसार । चकित छकित सब रहि गईं

जे त्रिया रहीं निज रूप गुमानी । ते लखि वर विन मोल विकानी
रहेउ न गर्व मान तिन केरो + । जब सुख धाम राम छवि हेरो
जे दृग अति मृगहू ते प्यारे + । सुन्दर गुण रहिं गर्व के मारे ।
ते गईं छिद दृग राम कटाक्षैं । विवश भईं सुधि तन नहिं ताछैं
जे अबला पति व्रत को पालैं । ते व्याकुल ता फिरैं विहालैं ।
जे गर्वीली निज छवि आनन । ते वींधीं मन सिज के बानन
जेहि रघुनाथ सयन दृग मारे । तेहि सुधि तहँ न मदन मतवारे
राम रूप लखि जकि रहि सारी । काम धाम की सुरति बिसारी
रघु नन्दन छैला अलबेला । जंत्र वसी अबलन उर मेला

दो० अति सुकुमार बाम सब । सहित सिद्धि अनुरागि
प्यारी भरी राम सों + । दैन दैवावन लागि ॥

सो० सुनौ लाल की बात + । एक सखी बोली बिहँसि
हम पूछत सकुचात । तुम जनि रिसवो गोइँ के

सुनौ भानुकुल कमल दिवाकर । कानन सुनेउँ काम अतिसुन्दर
तुम यह रूप कहाँ ते पायो + । की तुम का सोइ मनसिज जायो
बोली सिद्ध सुनौ रघु नंदन । तुम नायक त्रिभुवन जग वंदन

अबतो तुम हमरे नन्दोई ॥ जो पूछै रावरकु जानि गोई ॥
होत ब्याह मन मद सब कोई। अपनी जात पांत मा सोई ॥
सो भगनी अपनी प्रभु ताही। शृंगी ऋषि को कैसे बिवाही
की उनको ऋषिही लै भाग्यो। की वह ऋषिही के संग लाग्यो
इनकी बात बताबो लाला ॥ दीनबन्धु गोविन्द गोपाला।
रघुबंशी कुल रहेउ अकलंकी। अस कहि भवन रही निःसंकी

दो॰ लषण कह्यौ सुन लाड़ली जो विधना लिखदीन
तेहि संयोग होत तहं। ब्याह करम आधीन ॥
सो॰ कहां हम राज कुमार। कहां बैरागी नृप जनक
भयो बिवाह हमार। तुम घर बिधु गनि कोगनै

अवरौ एक हांस मन भावै। अति अचर्य सुनि सबको आवै
तुम सिधि वै लक्ष्मी निधि नहू। नारि नारि संग भयो बिवाहू
एक सखी कह सुनिये लालन। जीनको सकै तुम्हारे ख्यालन
प्रगट अहै ये सब जग मांही। तुम्हरी रीति कोऊ घर आहीं
अतिहि उदार अवधपुर नारी। तीन लोक को जन गनि ब्यारी
खीर खाय सुत जन्मत आहीं। पतिसों कछुक प्रयोजन नाहीं
सखी बचन सुनतै रघुराई ॥ बोले मृदुल मंजु मुसकाई।
आपन चाल छिपावहु प्यारी। कहो आन की बात दुलारी।
कोनहिं जनम्यो बिन पितु माता। वेद विदित सब जग बिख्याता
दो॰ उतपति जग पितु मात ते। बंधी वेद की नीति ॥
उपजत हैं महि खोदि कै। यह तुम्हरे घर रीति ॥
सो॰ चन्द्रकला परवीन ॥ लहुरी भगनी सिद्धि की
लेति काम मन छीन। बातन मे अति नागरी

तेहि अवसर बोली सुकुमारी ॥ सुनो लालजी बात हमारी ॥
तुमतो रहेउ तपसिन संग माहीं । कहो सो सत्य लाल हम पाहीं
यह छलछन्द फन्द कहं पाये । की मुनिनारिन तुम्हें सिखाये
की निज भगनि संग तुम सीखे । पायो स्वाद कैसे बिन चीखे ।
बोले भरत भली कहि सजनी । अहो कुंवारि अवै तुम रमनी
जाने नारि पुरुष की भामिनि ॥ चतुरायी कहां सिखे उ तुम कामिनि
रहे मुनि संग ज्ञान सिख पाये । रहे उ जो कछु अब तुम ढिग आये
काम कला हमें देव सिखाई । प्यारी कछु जनि राखु छिपाई
सिद्धि कहेउ सुन भरत सुजाना । ऐसी तुम जनि करो बखाना ।
दो० कहेउ सिद्धि सुनिये भरत । तुमतो परम सुजान ॥
तुम्हरी गिनती साधु मा । लौकिक ढंग कहं जान
सो० भरत कहेउ मुसुकाय । तुम साची सब कहति हो
हम साधू जस आय ॥ सो तुम का सब विदित है
ऐसे साधू हम पर काजी । ॥ सेवा करो होइ मन राजी ॥
आये अथक अपूरब योगी ॥ अधर सुधा रस के हैं भोगी
अस निज मन प्यारी गुणलीजै । अधरामृत रस भोजन दीजै
पूजन अतिथ करो तुम ऐसी ॥ कहेउ जो हम तुम से है जैसी
यह सुनि के बोली इक नारी । प्रीति रीति की जानन हारी ॥
सुन सखि इनकी एक बड़ाई । ऋषि मख रखन गये बुलाई
तहां ताड़का इन सुधि पाई । देखि के इनकी सुन्दर नाई ॥
काम विवश इनके ढिग आई । भये न कछु मारयो खिसियाई
बोले रिपु सूदन सहज ने । ॥ जो कर तृप्त भई नहिं उनते
दो० भामिन दोषन दीजिये । करिये सोइ उपाय ॥

तन धन आपन देखि कै हम सों लिउ भराय ॥
सो० भयो तुम्हरे घर ब्याह बिन जाने कारन तुके ॥
अब करि लेहु उमाहु सो पछितावन राखिये
वैसेहि हैं बसि माहि तिहारे । ५ रि हाजिर सब राज दुलारे ॥ ५ ॥
सुनि बानी रिपुसूदन केरी । बोलीसखी इक और बहोरी ॥
कहाँ सिखी लालन चतुराई । सो हमको तुम देव बताई ॥
की कहुँ मिली गुणागर नारी । की गनकन संग कियो बिहारी
तीनो भाइन ते तुम प्यारे । ५ । लखियत चिन्ह नवीन तुम्हारे
रिपुहन कह्यो कौन पहिचानें । आमिन भादिया भेद जानें ॥
तुम्है सरिस गनि को ते जानें । सो गुण उनते अधिके मानें ।
हम तुम चिन्ह तो एक दिखाई । तामे चाहिये अब सिसगाई ।
जैसे हम तैसी तुम प्यारी । ५ । भलो जोग विधि रच्यो सवांरी
दो० सुनत युक्ति रिपुदवन की बोली श्री निधि नारि
सुनौ रसिक रघुनाथजी आनन्द कन्द बिहारि
सो० मनमोहन तुम राम । ५ । कामौं मोहत देखिके ।
नगर अवध की बाम । कैसे बचि रहिं होयगी
यह कहि कर फिर रही चुपाई । सिद्ध कुंवर सुन्दर सुखदाई ॥
ताको हाथ पकर निज पानी । बोले प्रभु तासो मृदु बानी ॥
जो मर्याद रहई की बाँधी ॥ ५ । तासो रहत जत्ता सब साधी ॥
कहा रंक औ का अवनीशा । का है जती का सती मुनीशा ।
जोगति बाँधि दई करतारा । करत सबै हित मिल ब्यौहारा
अनुचित उचित बिचारि प्रभाउ । तहँ तैसो सब राखत भाऊ ॥
तुमतो अपने बसि जनसी हो । पुन सबही के भाव रती सो ।

यह सुनि भरत लखन शत्रुहन। दिनारी लाग्यो सब हंसन ॥ ६ ॥
सिद्ध आदि सब राज कुंमारी । तेऊं मन अति भईं सुखारी ॥
दो॰ येहि विधि हंस हंसाय हां दै दिखाय मृदु गारि
नाना भांत मनोरथहिं लगी करण सुकुमारि।
सो॰ काहुन कछु कलगि पान राम की पकाय कोउ
कुंवर कपोलन पान परसि जन्म फल पाइकै
कोउ कर चरणकमल प्रभु चापै। करति दूर निज तन की तापै ॥
कोउ गलमाल प्रभू को उतारै। मगन प्रेम वस निज उर डारै ॥
रघुवर मिलन सरिस सुख पावै। पुन आपन लै प्रभु उर लावै
कोउ चन्दन प्रभु वदन चढाई। पुन निज तन मे लेन लगाई।
अगर सुगंध लगावत कोऊं। तन की तपन बुझावत सोऊं ॥
कोउ कर लैके मृदु अंजन । अंजन आंख राम दृग खंजन
विलगु न मानै राम रंगीली । जानि सनेही अपन छवीली
कुसुम कली चुमि कोउ प्रवीनी। रचि कलगी कर प्रभु के दीनी
राम कुंवर कर छुवत नवीनी । थकित रही हरि छवि रंग भीनी
दो॰ कोऊ पान खवाय कै। पुन अपने मुख देइ ॥
प्रीतम प्रीत प्रसाद लै। प्रेम मगन सुख लेइ।
सो॰ निज निज मन अनरूप। जाकी जैसी भावना।
देखि सांवरो रूप ॥ ६ ॥ भईं प्रेम मतवारि सब
रसिक सिरोमनु श्री रघुनन्दन। गई चपलाकत नेह के फन्दन
जसजा के मन रही अभिलाषा। प्रभु ताकी तैसी रुचि राखा।
तब रघुनाथ सिद्ध सों बोले ॥ कहि प्रिया वचन विनीत अमोले
जो तुम हमका देव नदेशु ॥ तब गवने उ जहां अवध नरेशु

यह सुनि राम कुंवर की बानी । कौंप उठीं सिध आदि सयानी
अहबोहित मे हमैं चढ़ाई । लाल रूप रस अपने छकाई
अब तो आप अवध को जैहैं । हम विरहिन के प्रान कि मिरैहैं
नृपकिशोर चित चोर छबीले । चलन चहो हमैं छोडि रंगीले
तब कस हमसों प्रीत लगाई । हमैं मार चहो अवध सिधाई
दो० कीजुम ऐही वद रखी । जब जैहौं सुकुमारि ॥
करिहौं कतल त्रियन को । मारि प्रीत तरवार ॥
सो० तुम मानी नहिं कान । हम अवधा धरव भांतिसों
मारयौ नयनन बाण । भौंह कमानै तानकै
सुनियै रसिक राय रघुराई ॥ लोक लाज कुल कान बडाई ।
यह तो नाथ छिन्हें मा टूटै । लगी प्रीत पै कबहूं न छूटै ॥
ऊंच नीच जग को निउ जाती । तासु सनेह लगन लगि जाती
मिटैन तरस दरस विन देखे । कोटिन करै उपाय विशेखे ॥
तरसत रहत सदा दृग दोऊ । नहिं मानत विन देखे सोऊ ॥
बोलन हंसन चलन पिय प्यारे । होंन हियेते नेक नहिं न्यारे
तेउ तासु मिलवे की आसा । लालन रहत सदा उर पासा
यह जग बहुत पुरुष हम देखे । सुन्दर सुघर सुजान विसेखे
विन देखे निज प्यारे यार के । होतन शीतल छाती मारिके ।
दो० ऐसा श्रह दाहन तन । नयन लगन जो हिलाग
ज्यौं चूनै लै कांकरी । जब छिरकै तब आग
॥ सोरठा ॥
सो० गनमन नीत अनीत । निशि दिन ताही में मगन
जिनके हाथ वितीन । प्रीत रीत ते जानहीं ॥

भरि भरि आवैं नयनन नीरा। यह दुख दाहत सकल शरीरा
प्रीत भाल पहिचाने प्यारे। प्रीतवान की पीर निहारे ॥
त्यागे जन्म सकल सुख भोगू। देवन देव पिया को वियोगू
देव यही वर तुमकर छोहू। होयन कवहूं पिया सों बिछोहू
परवस परि औसर यह खोई। अवसि भिखारी सवतज होई
यह जल मछ जन्म भव वसिये। करि तप जोग आप तन कसिये
पैसपनेउ विछुरैन विधाता। जासों आपन तन मन राता ॥
कर्म धर्म त्यागे जग सारो। फिरै प्रेम वस नित मतवारो
देव विधाता वर हमें रहौ। विछुरैन कवहूं अपन सनेही

दो० वर सुख भस्म लगायके स्वाय माँग जग टूक
पै करतार यासों। परै न कवहूं चूक ॥

सो० सवतजि होइ भिखार जान प्रान सव खोयके
होइन कवहूं न्यार। पिय मूरति इन नयनसों

॥ चौपाई ॥

जेते सुख शुभ सव जग माहीं। पिय विछुरत दुख सम होइ जाहीं
यद्यपि हम अवला जड़ जाती। अति अज्ञान नीच सव भांती
जो लगि जाय प्रीत संग जासों। दिक जाती हम हूं कर तासों
नित स्वारथ रत चलैं अनीती। कपट न राखें जासों प्रीती ॥
हम तिय नीच नीच की खानी। बोलें सदा असांची वानी ॥
जासें प्रेम प्रीत रस चाखें ॥ ताको तन मन सव दै राखें ॥
पति पितु पुत्र बंधु गुरुजनते। संतत न्यारी रहें सवनते ॥
पै कछु वीच न राखें तासो। बांधै प्रीत डोरि संग जासें ॥
हमते नीच और नहिं होई। तुम सम रघुवर ऊंचन कोई।

दो० विनय प्रभू सुनि लीजिये तुम समान नहिं कोय
पै यह प्रीति जो तो लिये गरू हमारी होय ॥ ॥
सो० सुने त्रियन के वैन । तरुन करुन रस में भरे ॥
भर आये जल नैन । प्रीत रीत पहिचान के
बोले वचन भक्त भय भंजन । कृपा सिंधु संतन जन रंजन ॥
सुनो त्रिया अब तुम सब कोई । कहों प्रकृति निज राखौं गोई ॥
शिव सनकादि आदि मुनि नारद । जे मुनिवर विज्ञान विशारद
इनते और बड़ो नहिं कोई । वेद पुराण विदित है सोई ॥
तिन हूनते तुम अधिक पियारी । सुनि लीजे मिथराज कुमारी
करे प्रीत जो मोसों कोई ॥ ॥ होय जो ज्ञान अजानो सोई ॥
प्राण समान ताहि मैं जानो ॥ अवगुण ताके एक न मानो ॥
मेरी है यह बानि पियारी ॥ ॥ प्रीतवान जन जानैं विचारी ॥
नहिं खोजे पावैं मोहिं प्रानी । करि जप जोग ध्यान तप ज्ञानी
दो० हिम तन दहै न कहे कछु पुनते हि लखि मुद मान
ऐसी पीर कमल की । बासर पति कह ज्ञान ॥
सो० सुनियत बड़ी बड़ाय । जिन प्राणिन को जक्त में
सब मे एक खुटाय । ॥ तिन विचार जो देखिये
तरसत रहत सदा बिन पाये । तकित चकोर न शशि कछु भाये
लखि घन घटा नृतत कछु मोरा । तनक पीर नहिं मेघ कठोरा
पिव पिव चातिक टेर लगावे । पिय के जीव दया नहिं आवै
सरबस तजि कै प्रीति बसाई । देखौ मीन कि ऐसी मिताई ॥
जल को छांड़त नहिं दिन राती । जल की फाटत तन कन छाती
जरत पतंग दीप संग माही । दीपक भई दया कछु नाहीं

प्रीतवान वहुतक अस देखे। धीरज ध्यान जिन अवरेखे
एक प्राण तेहि ऊपर देई ॥ एकन जानत पीरा तेई ॥
ऐसी नहीं है प्रीति हमारी। सुनो सिद्ध सुख धाम पियारी।
दो० प्रीत मान पीतम को। पल भर तजौं न प्रान
निश दिन ताके संग फिरौं। याहि हमारी बान॥
सो० जो को उ गर्व दिखाय। छोट मान मेरे यार को
ब्रह्मौं माथ नवाय॥ यैसो वड़ो वनाय तेहि
सगरे लोकन औ सब ठाऊं॥ सवही से मैं ताहि पुजाऊं॥
ब्रह्मादिक की काह चलाऊं। मो हु ताके निज माथ नवाऊं।
पुन तासों कछु भेद न राखौं। यद्यपि चूक करै वह लाखों
राज साज सुत धन वैदेही। सबते प्रिय मोहिं यार सनेही॥
केतो विपत सहौं शिर अपने। पै निज यार न त्यागों सपने
नाना रूप धरौं तिन हेत॥ वन वन फिरौं सहत दुख केत
गीध कवंद अजामिल गनिका। सेवरी विभीषन स्वपच वंका
जामवंत हनुमत कपिराऊ। ये सब जानै मोर सुभाऊ॥
जो जन मम पद बांधै प्रीती। रहौं दास होइ मम अस नीती
दो० मोसों प्रीत लगाय कै। करै और की आस॥
कोटिन यत्न करै वह। मैं न जाऊं तेहि पास।
सो० मंत्र भाव हिये लेख। प्रेम परायन मुद करन
कलन परै विन देख। यैसे प्रीतम यार के।
मन में स्वारथ मुख परमारथ। तिनकी गति में कहौं जथारथ
कपट प्रेम मन में दर्शावत॥ ऐसे मीत सपनेहु न भावत
महा प्रलय जब जग की होई। तामो वचत नहीं है कोई॥

पै मेरे प्रीतमकी सुनप्यारी। ॰ । कबहुं नाश नहिं राजकुमारी
जाको हौं मैं जग सब वारा ॰ । ताको कवन है मारन हारा ॥
चहौं अथापन ताको मोहीं। तेहिको थापे सत्य कहौं नोहीं
तनको त्रासु मैं चहौं भलाई। ताकी करैं सब सुर सेवकाई।
क्षण में रंक विरंचि बनाऊं। छण मे विरंचिहि रंक कराऊं
राईको क्षणमें शैल बनाई। करौं शैलको क्षणमा राई ॥
दो॰ सुनु प्यारी मैं कहत हौं। बात एक पुन सांच ॥
शिवसनकादिब्रह्मादिको तिन्है नचाउं नाच
सो॰ जोगसिद्ध चतुराइ ॰ । कर्म धर्म औ धीरता
राजनीत निपुनाय ।। ज्ञान ध्यान विज्ञानता
इनते जीत सकैं मोहि नाहीं ।। कोटि उपाय करै मन माहीं ॥
हारजाउ प्रेमी पुरुसन ते। ॰ । तहंन बिसाय मोर कछु उनते
हे तुम सबै प्रेम की मूरति ॰ । बलिहारी तुम ऐसी सूरति ॥
सिद्ध आदि सब राजकुमारी। प्रिया मोहि प्रानहुं ते प्यारी॥
तुम हियेकी अभिलाषबुझैहौं प्यारीतुमते तिलगान होइहौं
लोक लाज मर्याद बचैहौं ।। मनकि कामना तुम्हरी पुजैहौं
हम सब भांत तुम्हारे प्यारी ।। हो तुमहूं सब भांत हमारी ॥
सत्य २ सब सत मम बानी ।। सुनो सिद्ध तुम परम सयानी
तुमहू अबकछु अंतन मानो। मोर कहा अपने मन आनो
सो॰ सुनत वचन रघुवरके। खुलि गये कपट किवार
बाढ्यौ प्रेम त्रियनमन। रह्यो न तिनहि सम्हार॥
सो॰ भूलगई सब चाल ।। सुनिबानी प्रभुसुखकरन
तनको रह्यो न ख्याल। नहिं जानत हम कवन हैं

पुनि धरि धीर जोरि जुग पानी। सिद्ध आदि बोली मृदु बानी
धन्य भाग हमरे जग माहीं ५। हमते और बड़ो कोउ नाहीं।
बूड़त रहीं बिरह दुख सागर। राखलीन्ह गहि करुणा आगर
हम नारी सब भांति अनारी। कीन्ह प्रीति मुद मंगल कारी
राम कुमार तुम्हारे बरो वर ५। कीन्ह कृपा नहिं कोउ हम अपर
प्रति उपकार न हमसों होई। जस तुम कृपा कीन्ह प्रभु सोई
चन्द्र समान होइ नहिं सारे। कबहुं जुरैं जो लाखन तारे ॥
जेहि २ जोनि कर्म बस त्रासा। देइ जन्म जो हमें बिधाता ॥
तहं २ रसिक राय रघुनायक। मिलो सनेही सब सुख दायक

दो० वरु बिधि करै तन ज्ञात न। छूटै स्मरण सराहें देह
कौन्यौं जन्म नही छुटै हम तुम नात सनेह ॥

सो० सुनि करुणा रस बैन अंतर जामी जगत के ॥
कहि २ कोमल बैन सनमाने सिध आदि दे

॥चौपाई॥

सबसे बिदा मांगि रघुनाथा ५। धारे चरण अनुज सब साथा
सिद्ध महल ते निकस प्रभु आये। मानौ चार चन्द्र छवि छाये
पान खवाय करति मुख बैना। साथै चली सिद्ध सुख ऐना
राजमहल आये रघुराई ५। जहां सुनयना मातु सुहाई ॥
चरण प्रनाम कीन्ह सुखदानी। विदा हेतु बोले मृदु बानी।
सुनि अस वयन सासु सुनयना। भरि आये जल को यनन यना।
रहौ कि जाब न कछु कहि आवै। जनौ कृपिन निधि रास गवावै
पुनि धरि धीर सुनयना रानी। वडे मोल के भूषण आनी ॥
अनुज सखन पुन रामहि दीन्ही। हर्ष सहित कर निज प्रभु जी न्ही

दो० वसन विचित्र पवित्र सुठ पहिरगये जगदीश ॥
पाय पोशाक नाय शिर मुदित लही आसीश ॥
सो० प्रेम पियासी नार ॥ हम रावर की किंकरी ॥
आपन व्रत्ति विचार । हम पर छोह न छाडिये
भरि दृग जल बोले सुख कारी । हम तुम्हार वदि सुन सिधप्यारी
असकहि बोध दियो बहु भांती । गईं महल धरि धीरज छाती
अनुज सखन युत पुन रघुराई । जनक सभा सब पहुंचे जाई
सादर कीन्ह चरण पर नामा । पायरजाय चले सुख धामा
श्री निधयुत अवधेश कुमारा । आये निकस निमिसज दुआरा
जान तयारी सेवक आये ॥ बाहन तिन बहु भांत लगाये
कोउ तुरंग कोउ मतंग सवारा । कोउ सुख पाल चढे सुकुमारा
कोउ सुन्दर स्यंदन चढि राजे । बाजन बिजे विविध विध बाजे
फहरैं धुजा नकीव पुकारैं ॥ चहुं दिशि नेजा गार उच्चारैं ॥
दो० कोउ कोउ छत्र की छांह करि कोऊ पान खवाय
रोम चमर दोउ ढोरते । कोउ डुलावति जाय
सो० चले चढे सुख पाल दूमर चना युत सुखसदन
जनक नगर की वाल । चढी अटा पर देखहीं
ललकि झरोखन झांकन लागीं । श्यामल मूरति लखि अनुरागीं
कोउ कोउ दरसैं छज्जन छातैं । कोउ काहू सो करति कुम वातैं
गौर वरण जस जनक किशोरी । श्याम रूप तस राम की जोरी
कोकहि कवन जन्म धो प्यारी । पुजिहैं मन अभिलाष हमारी
करि वातैं प्रभु सों कोउ नारी । मिलन हेतु प्रभु भुजा पसारी
कोउ कहै धन्य राज कुलनारी । कीन्ही पूर्व पुण्य भल भारी

हंस हंसाय प्रभु सों परवीनी। जन्म सुफल आपन करलीनी
धन्य जन्म जग जनक कुमारी। पायो वर त्रिभुवन सुख कारी
कोउ कहै कहां कुवर रघुवंशी। तीन लोक जिनकी पर संशी
दो० केहि विधि होइ मिलन हरि हम मति मन्द गवांर
बीत्यो जन्म वृथा ही विर च्यों वादि करतार ॥
सो० मेरो शोच किन नारि होत वही जो भाग में ॥
भरि दृग लीन्ह निहारि जितनो रह्यो संयोग हम
सुनी त्रियन की आरत बानी। प्रेम भक्त करुणा रस सानी ॥
तिनके दिश चितयो किरपाला। करि प्रबोध प्रभु दीन दयाला
द्रुम मग बहु विध करत विलासा। पहुंचे कुंवर सबै जनवासा
गे पितु पास उतर सुख धामा। अनुज सखन युत कीन प्रनामा
पूछत भूप लाय उर लीन्हा। राम कलेवा केहि विधि कीन्हा
राय रजाय राम जब पाई। कहियो प्रभु सब सहज सुभाई
सो सुनि मुनि दसरथ नरनाहू। लहेउ अमित मुद मंगल लाहू
नृप रजाय गवने निज वासू। जहं सबको सब भांत सुपासू
अति वडे भाग जनक पुरवासी। नित नव सुख पावत सुख रासी
दो० कोटि इन्द्र नहिं लखि परत निरखत यह सुख भोग
धन्य सुहाति मिथिलापति जिन कीन्ह्यो अस जोग
सो० पावत जिंग मन पार। शिव चतुरानन सारदा ॥
प्रभु सुयश उदधि अपार लालमनी किमि कहि सके
भाखा ललित सो कवि कहत तुलसी अनुदिन रहत सो मम हिय हुलसी
तेहि भरोस बल बुद्धि ढिठाई। बंदि चरण जुग हर सुखदाई
सम्वत वनइस से औ तीसा। सुमिर सिद्ध गणपति गौरीसा

ग्राम हमीर पूर मन भावन। बहत निकट यमुनाजल पावन
तह बैसाख पक्ष उजियारा। कीन्ह कथा भगवत उपचारा
मास असाढ कृष्ण पखवारा। सुभतिथ तीजसुदिन भृगुवार
राम कलेवा करि सम्पूरन। लहौ जन्म को सुखभर पूरन॥
कहैं सुनैं जे हरि गुण प्यारे। ताको सीता राम हमारे॥
भूल चूक जोपै कहुं होई। लेउ सम्हार सुजन तुम सोई

॥दोहा॥

॥ राम कथा कलिमल हरण कहै जो नर धरि ध्यान
तिनके मनकी कामना पुरवैं श्री भगवान॥

॥सोरठा॥

करै जो हरि गुण गान रसिक सो मणि राम के
तिनै जोग जप दान सुमिर नाम भव निधि तरै
इतिश्री रामकलेवा लालमनी
कृत समाप्त शुभ
मस्तु